Class Notes **B.A. Geography Part-2, Paper- IV, Unit-IV**

वन संसाधन
Forest Resource

बोलेंद्र कुमार अगम,
सहायक प्राध्यापक, भूगोल,
राजा सिंह महाविद्यालय, सिवान

पृथ्वी पर बिना किसी माननीय सहायता के स्वत: ही उगने वाले वनस्पति को प्राकृतिक वनस्पति कहते हैं । इसमें पेड़-पौधे, घास तथा झाड़ियां सम्मिलित होती हैं । ये प्रकृति प्रदत्त अमूल्य संसाधनों में से एक है । प्राकृतिक वनस्पति को हम आगे अब वन के रूप में लिखेंगे ।

वनों को प्रभावित करने वाले कारक

मुख्य रूप से वनों को ***जलवायु तथा मिट्टी*** सबसे ज्यादा प्रभावित करती हैं । वनों को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक निम्नलिखित हैं:

तापमान
वर्षा
वायु
मिट्टी

तापमान

तापमान और वनस्पति में गहरा संबंध पाया जाता है । अत्यधिक तापमान वाले क्षेत्र की वनस्पति की जड़ें लंबी और गहरी होती हैं ताकि ज्यादा से ज्यादा वह जल अंदर से सोख सकें । पत्तियां कम होती हैं । पत्तियों की जगह कांटे होते हैं ताकि वाष्प उत्सर्जन कम हो सके । इसके विपरीत शीत मरुस्थल में ऐसी वनस्पति का विकास होता है जो भूमि के ऊपर ही छोटी-छोटी झाड़ियों या घास के रूप में होती हैं । उनकी जड़ें बहुत छोटी और पतली होती हैं ।

वर्षा

जहां साल भर वर्षा होती है वहां सदाबहार वन पाए जाते हैं । वृक्ष अत्यधिक लंबे, ऊंचे और हरे-भरे होते हैं । जहां बारिश कम होती है वहां कांटेदार पौधे होते हैं और जहां मध्यम वर्षा होती है वहां घास के मैदान पाए जाते हैं ।

प्रकाश

प्रकाश से ही हरे पौधों में भोजन बनता है । इसलिए उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में प्रकाश की प्राप्ति के लिए पौधे अत्यधिक ऊंचाई को बढ़ते चले जाते हैं ताकि उन्हें प्रकाश मिल सके ।

पवन

पवन भी वनस्पतियों के लिए बहुत उपयोगी तत्व है । पवन वर्षा का कारण है । जहां तेज हवाएं चलती हैं वहां वृक्ष नहीं पाए जाते हैं ।

मिट्टी

मिट्टी पौधों को पोषक तत्व उपलब्ध कराता है इसलिए मिट्टी वनस्पतियों के लिए एक महत्वपूर्ण तत्व है । पौधे भी मिट्टी को पकड़े रहते हैं इसलिए मिट्टी का कटाव नहीं हो पाता है ।

प्राकृतिक वनस्पति के प्रकार

वन
घास के मैदान और
मरूभूमि की झाड़ियाँ व कांटेदार वृक्ष

वनों के प्रकार

विश्व में वन निम्नलिखित प्रकार के पाए जाते हैं

उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन
उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन
शीतोष्ण कटिबंधीय शुष्क सदापर्णी वन
शीतोष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन
शीत कटिबंधीय कोंणधारी वन

उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन

ऐसे वन मुख्यत: अमेजन बेसिन, विषुवत रेखीय अफ्रीका का मध्यवर्ती एवं पश्चिमी भागों में, दक्षिण-पूर्व एशिया एवं उनसे लगे हुए दीप समूह में मिलते हैं । इन वनों का अधिकतर विस्तार 5 डिग्री उत्तर से 5 डिग्री दक्षिणी अक्षांश के बीच है । अमेजन घाटी में इन वनों को सेल्वा कहते हैं ।

जहां तापमान वर्ष भर उचा रहता है और वर्षा की मात्रा 200 सेंटीमीटर तक होती है, इस प्रकार के वन पाए जाते हैं ।

प्रमुख वृक्ष: आबनूस, महोगनी, बास, रोजवुड, लागवड, ब्राजील वुड, रबड़, आयरन वुड, नारियल, केला, ग्रीनहार्ट सैगो, सिनकोना, बेंत, ब्रेड-फ्रूट आदि ।

इस प्रकार के वन काफी सघन होते हैं । छोटे से क्षेत्र में हजारों प्रकार की वनस्पतियां पाई जाती हैं । इन वनों में प्रवेश करना काफी कठिन होता है । लकड़ियाँ कठोर होती है । इसलिए इनका आर्थिक महत्व कम है । हालांकि यह पृथ्वी के फेफड़े माने जाते हैं ।

उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन

जिन भागों में वर्षा 100 से 200 सेंटीमीटर होती है या फिर ग्रीष्म ऋतु में वर्षा होती है, वहां मानसून बन या पतझड़ वन पाए जाते हैं । इस प्रकार के वन भारत, उत्तरी म्यांमार, उत्तरी थाईलैंड, लाओस, उत्तरी वियतनाम, मध्य अमेरिका, उत्तरी ऑस्ट्रेलिया, पूर्वी अफ्रीका, मलेशिया, इंडोचीन आदि देशों में पाए जाते हैं ।

प्रमुख वृक्ष: सागवान, बांस, साल, चंदन, देवदार, महोगनी, आम, जामुन, नारियल आदि
इन वनों के वृक्ष ग्रीष्म ऋतु से पहले अपनी पत्तियां गिरा देते हैं ।

<u>शीतोष्ण कटिबंधीय शुष्क वन</u>

उष्ण मरुस्थल से ध्रुव की ओर बढ़ने पर मार्ग में भूमध्य सागरीय जलवायु प्रदेश पड़ते हैं । यह वन उत्तरी गोलार्ध में 30 से 45 डिग्री अक्षांश के मध्य में महाद्वीपों के पश्चिमी भागों में और दक्षिणी गोलार्ध में 40 डिग्री से धुर दक्षिण तक पाए जाते हैं । इस प्रदेश की वनस्पतियों को मुख्यतः दो कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । शीतकाल में शीत और ग्रीष्म काल में जल के अभाव का । यहाँ की वनस्पतियों की दो सुसुप्तावास्थाएं होती है: एक शीतकाल में दूसरी ग्रीष्म काल में । केवल वसंत ऋतु में ही यहां की वनस्पतियां भली प्रकार बढ़ सकती हैं ।

प्रमुख वृक्ष: ओक, जैतून, अंजीर, पाइन, फर, साइप्रस, चेस्टनट, लारेल आदि । सूर्य प्रकाश जहां अच्छे से पड़ती है वहां नींबू, नारंगी, अंगूर, अनार, नाशपती, शहतूत, आदि रसदार फल पाए जाते हैं ।

इस प्रदेश की वनस्पति मैं खुले, शुष्क, किंतु सदा हरे-भरे रहने वाले वन मिलते हैं जो कम वर्षा तथा अनुपजाऊ मिट्टी वाले स्थानों में कटीली झाड़ियों में बदल गए हैं । इन प्रदेशों के वन सदा ही हरे भरे रहते हैं क्योंकि शीतकाल में नमी के साथ साधारण शीत पड़ता है जिससे पत्तियां झडती नहीं और ग्रीष्म काल में गर्मी तथा शुष्कता से बचने के लिए यहाँ वृक्षों में कई विशेषताएं होती हैं । जैसे वृक्षों की जड़े लंबी होती हैं और इनके मोटे छाल होते है जिसमें जल संचय करने की क्षमता होती है ।

<u>शीतोष्ण कटिबंधीय चौड़ी पत्ती के पर्णपाती वन</u>

यह वन शीत-प्रधान, समशीतोष्ण या पश्चिमी यूरोपीय जलवायु वाले प्रदेशों में पाए जाते हैं । उत्तरी गोलार्ध में इनका विस्तार 40 डिग्री और 60 डिग्री अक्षांश के बीच है किंतु दक्षिणी भाग में पूर्वी तटीय भागों में 15 डिग्री अक्षांश और पश्चिम तटीय भागों में 40 डिग्री अक्षांश से धूर दक्षिण तक फैले हैं ।
चीन, जापान, कोरिया, मंचूरिया, पश्चिमोत्तर यूरोप, पश्चिमी कनाडा, पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा के सेंटलॉरेंस प्रदेश में विशेष रूप से पाए जाते हैं ।
जिस क्षेत्र में वार्षिक औसत तापमान 8 डिग्री सेल्सियस से 3 डिग्री तक और वर्षा की मात्रा 51 सेंटीमीटर तक होती है ये वन पाए जाते हैं ।

प्रमुख वृक्ष: ओक, मेपल, बीच, हैमलॉक, अखरोट, पॉपुलर, एश, चेरी, हिकोरी, बर्च आदि ।
ग्रीष्म में साधारण गर्मी, शीत में कठोर सर्दी और वर्ष भर अछि वर्षा हो जाने के कारण यहां अच्छी, कडी और पुष्ट लकड़ियों के वन पाए जाते हैं । यह वृक्ष फर्नीचर बनाने की सुंदर और पुष्ट लकड़ियाँ प्रदान करते हैं ।

<u>शीत कटिबंधीय कोंणधारी वन</u>

इन्हें रूस के साइबेरिया में टैगा वन कहा जाता है । यह मुख्यत: 60 डिग्री अक्षांशों तक पाए जाते हैं । इन वालों की लकड़ियां बहुत ही मुलायम और उपयोगी होती है जिससे कागज, दियासलाई आदि बनाना आसान है । ये वन सदा हरे भरे रहते हैं ।

<u>वनों का उपयोग</u>

वनों का उपयोग प्राचीन काल से किया जा रहा है ।

<u>पहला वस्तु संग्रह</u> - पहले वनों का उपयोग मुख्य रूप से वस्तु संग्रह के लिए किया जाता था । जैसे जड़ी बूटियां, सिनकोना की छाल, कार्क, बीड़ी, दवा आदि । विभिन्न प्रकार की पत्तियां, फल, फूल, नारियल, बदाम, केला, रबड़, मोम, गोंद, लाख आदि ।

<u>दूसरा वनों से लकड़ी काटना</u> - वनों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं बड़े सुसंगठित पैमाने पर विकसित उद्योग लकड़ी काटने और चीरने का है । यह एक प्राथमिक उद्योग है । लकड़ियों से हम मकान, फर्नीचर रेलवे के स्लीपर के अलावा अन्य बहुत ही उपयोगी वस्तुएं बनाते हैं जो मानव जीवन को आसान बना देते हैं ।

<u>तीसरा कागज और लुगदी उद्योग</u> - टैगा वनों से प्राप्त मुलायम लकड़ी से लुगदी बनाया जाता है जिस पर कागज उद्योग निर्भर करता है ।

वनों के अन्य महत्वपूर्ण उपयोग में पहला प्राणवायु ऑक्सीजन देना, दूसरा कार्बन डाइऑक्साइड ग्रहण करना, तीसरा अच्छी वर्षा लाना, चौथा प्राकृतिक संतुलन बनाए रखना आदि महत्वपूर्ण हैं ।

<u>वनों का दुरुपयोग</u>

वन एक अमूल्य संसाधन है और यदि ध्यान नहीं दिया गया तो यह एक अनवीकरणीय संसाधन भी है । परिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने में, जल प्रवाह नियमित रखने में, मिट्टी संरक्षण में और मनोरंजन का भी साधन है । परंतु वन संसाधन की सुरक्षा तथा सदुपयोग के प्रति सभी देशों में पर्याप्त जागरूकता नहीं है । इसलिए वन आए दिनों नष्ट होते जा रहे हैं ।

<u>वनों में आग लगना</u> - वनों में हर साल आग लगने से बहुत ही अपूरणीय क्षति होती है अभी ऑस्ट्रेलिया के वनों की आग चर्चा में था ।

<u>निर्वाणीकरण</u>: अंधाधुंध लकड़ी कटाई से वनों का विनाश होता चला जा रहा है ।

<u>वन संरक्षण</u>

वनों को दुरुपयोग तथा क्षति से बचाने के लिए वन संरक्षण अनिवार्य हैं । वनों को फसल के रूप में मानना मानव धर्म होना चाहिए । वनों से लकड़ी काटने के साथ-साथ वहां कटे हुए वृक्षों के स्थल पर वन रोपण करते जाना आवश्यक है ।

वनों का संरक्षण करने के लिए चयनात्मक कटाई: इस प्रक्रिया में चुने हुए बड़े पेड़ों को काट लिया जाता है जिससे बचे हुए पेड़ शीघ्रता से बढ़ सकें ।

स्वास्थ्य कर कटाई भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है ।

अभी बिहार सरकार ने भी रक्षाबंधन के दिन वनों को / वृक्ष को राखी बांधने का संदेश दिया है ताकि हम वृक्ष को बचा सके । कुछ समय पहले सुंदरलाल बहुगुणा का *चिपको आंदोलन* भी काफी प्रसिद्ध रहा है जो बन को बचाने के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण साबित हुआ है ।

वनों का संरक्षण यदि नहीं किया जाए तो शायद मानव का और इस धरती का अस्तित्व नहीं रह पाएगा क्योंकि तब प्राकृतिक दशाएं इतनी प्रतिकूल हो जाएंगी जितना हम सोच नहीं सकते । इसलिए हर किसी को अपने जीवन में एक बड़ा आकार धारण करने वाला का पेड़ जरूर लगाना चाहिए जो आने वाली पीढ़ियों को जीवनदायिनी ऑक्सीजन और जीवन रूपी जल प्रदान कर सके ।

****

सन्दर्भ: सन्दर्भ: आर्थिक भूगोल के मूल तत्व - ज्ञानोदय प्रकाशन, आर्थिक भूगोल - SBPD प्रकाशन

****